ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-3 अंक : 35

सहयोग शुल्क : रु. 1 / नवंबर : 2019

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांग नवरात्री विशेषांक

❝ दूसरों की मदद करते हुए यदि दिल में खुशी हो,
तो वही सेवा है। ❞
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

❝ जो अपने कदमो की काबिलियत पर विश्वास रखते है,
वो ही अक्सर मंजिल पर पहुँचते है। ❞
– प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

दीपावली का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाने के बाद नया साल नई उम्मीदों का साथ हमारे पास आता है। ये त्योहारों का काम नया हौसला ले कर आता है। किसी शायर ने कहा है कि,

रख हौसला वो मंजर भी आएगा,
प्यासे के पास चलकर समंदर भी आएगा,
थक कर ना बैठ मंजिल के मुसाफिर,
मंजिल भी मिलेगी और जीने का मजा भी आएगा।

इसमें कोई शक नहीं कि कभी-न-कभी किसी ने आपका भी हौसला बढ़ाया होगा। समय-समय पर हम सबको हौसले की ज़रूरत होती है, खासकर बढ़ते बच्चों को और दिव्यांगजनों को। जैसे पौधे को पानी की ज़रूरत होती है वैसे ही इन सब को हौसले की ज़रूरत होती है। जब किसी का हौसला बढ़ाया जाता है तो वे महसूस करते हैं कि उनकी कदर की जाती है और वे भी अहमियत रखते हैं। लेकिन आज हम संकटों से भरे वक्त में जी रहे हैं। लोग सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं, दूसरों से कोई लगाव नहीं रखते और न ही कोई किसी का हौसला बढ़ाता है।

हम दूसरों का हौसला बढ़ाने के लिए उनके कामों की तारीफ कर सकते हैं और ये हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी है। इस तरह जियो की दूसरो को जीने के लिए सहारा बन सको।

हम इस पत्रिका के माध्यम से यही प्रयास कर रहे है, आप भी हमारे साथ जुड़ सकतें है। इस पत्रिका के बारे में आपके प्रतिभाव हमें भेजें। हम आपके द्वारा दिए जाने वाले सुझाव या विचार पत्रिका में प्रकाशित करेंगे।

पाठकों से हम यह निवेदन करते है की 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनों के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम व कोई दिव्यांगजन के विशेष प्रदान का ब्यौरा भी आप हमें भेज सकते है।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

नवंबर : 2019, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 3 अंक : 35

✦ प्रेरणास्त्रोत और संपादक ✦

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

✦ सह-संपादक ✦

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

✦ संपर्क-सूत्र ✦

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

✦ मुद्रक ✦

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

वोइस टू दिव्यांग

दि. 4/10/19 शुक्रवार को ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे-केर सेंटर के मानसिक दिव्यांग बच्चों ने नवरात्री उत्सव के रूप में संस्था में ही बच्चों और अभिभावकों के लिए गरबा का आयोजन किया गया। पहले बच्चों ने गरबा किया बाद में अभिभावकों ने भी बच्चों के साथ गरबा किया। गरबा के बाद आरती की गई जिसमे सभी बच्चों को आरती का लाभ दिया गया। संस्था द्वारा बाद में बच्चों और अभिभावकों को प्रसाद के रूप में पेंडा दिया। इसके बाद संस्था ने सभी बच्चों और अभिभावकों को फाफडा-जलेबी का नास्ता करवाया।

"दिव्यांग बच्चों के लिए गरबा-महोत्सव"

नवली नवरात्रि की शुरुआत में विकलांग बच्चों के लिए नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फॉर मेंटली चेलेंज्ड- मेमनगर, अहमदाबाद द्वारा करीब १०० दिव्यांग बच्चों के लिए आज सुबह 10 से 2 बजे तक लायंस हॉल-मीठाखली में गरबा उत्सव आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने पारंपरिक पोशाक पहनकर डी.जे के ताल पर नृत्य किया। बच्चों के साथ स्कूल के शिक्षक और अभिभावक भी झूमे थे। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन-ड्रेसिंग के लिए 10 पुरस्कार भी दिए गए।

यह कार्यक्रम लियो क्लब कर्णावती द्वारा प्रायोजित था। यहां तक कि लियो क्लब के युवा सद्स्य भी इन दिव्यांग बच्चों के साथ मन लगा कर झूमे। कुछ बच्चों ने हेलमेट पहनकर सुरक्षा का संदेश दिया और समाज को हेलमेट पहनने का आग्रह किया। पहले के समय में पगड़ी सिर की सुरक्षा थी और अब हेलमेट पहनने से सुरक्षा मिलती है। नवली नवरात्र की शुरुआत ऐसे ही अनोखे गरबा के साथ हुई थी। माताजी को प्रार्थना की सबको शक्ति दे।

ॐकार सेवादलने मनाया दिव्यांगजनो के साथ नवरात्री उत्सव

परम पूज्य गुरुदेव संतश्री ॐऋषि की प्रेरणा और आशीर्वाद से ॐकार सेवादल कच्छ द्वारा नवरात्री के अवसर पर दि.५/१०/२०१९ को मधापर गाँव में स्थित दिव्यांग कन्या कुंज (नवचेतन अंधजन मंडल, माधापर) की बालिकाओं का पूजन और भोजन समारंभ और गरबा आयोजन किया गया, उस की दिव्य झलक

दिव्यांग बच्चोने मनाया पूज्य गांधी बापू की १५० वीं जन्म जयंती का अवसर

दि. 4/10/19 शुक्रवार को लर्निंग क्लिनिक,पालडी, अहमदाबाद के मानसिक दिव्यांगता से पीड़ित बच्चोंने पू. गांधी बापू की १५० वीं जन्म जयंती के अवसर को मनाया।

रामधुन और प्रार्थना (वैष्णव जन..) दिव्यांग बच्चों द्वारा की गई। लायन्स डिस्ट्रिक्ट के वाईस प्रेसिडेंट बालमुकुंद भाई ने भाषण दिया। इसके बाद बच्चों ने गरबा पेश किया। उपस्थित सभी लोगों ने इन दिव्यांग बच्चों की खुशी का अभिवादन किया।

गांधी जयंती के शुभ अवसर पर, स्कूली बच्चों ने पेपर बैग बनाकर सिंगल यूज़ प्लास्टिक हटाने के दृष्टिकोण को पूरी तरह से सहकार दिखाकर अपना उत्साह जाहिर किया। विद्यालय के शिक्षकों ने पूरे कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए एक आवकार्य और प्रशंसात्मक योगदान दिया।

वोइस टू दिव्यांग

स्मित चाइल्ड एज्युकेशन एन्ड डेवलोपमेन्ट ट्रस्ट और ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए गरबा का आयोजन किया गया। शरद पूर्णिमा के दिन वाडज स्थित वेराई माता के मंदिर परिसर में यह आयोजन किया गया था। जिसमे स्पेश्यल एबल बच्चों ने ट्रेडिशनल ड्रेस पहन कर गरबा किया। दिव्यांग बच्चों भी गरबा का आनंद ले सके यह विचार से यह आयोजन किया गया तो सब दिव्यांग बच्चों ने झूम कर इस गरबा में हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम में ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी और 'दिव्यांग सेतु' पत्रिका के सह-संपादक श्री मिहिरभाई शाह भी उपस्थित रहे थे। यह गरबा के कार्यक्रम में बच्चों के साथ उनके अभिभावकों ने भी हिस्सा लिया।

जन्मदिन

ॐ कार फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे केर सेंटर की तलिमार्थी कुंज विजयभाई परमार की 3/१०/२०१९ को और अरुण रमेशभाई सोलंकी की १२/१०/२०१९ को जन्मदिन मनाया गया। संस्था द्वारा बर्थडे केक मंगवाया गया और बच्चों ने सब की उपस्थिति में केक काट के जन्मदिन मनाया। उपस्थित सभी बच्चों, अभिभावकों और शिक्षको ने इन बच्चों को जन्मदिन की शुभकामनाऐं दी । इसके बाद संस्था द्वारा सभी बच्चों को नास्ता दिया गया । उस दिन देखा की बच्चों की आनंद की कोई सीमा नहीं थी ।

स्मित चाइल्ड एज्युकेशन एन्ड डेवलोपमेन्ट ट्रस्टने मनाया गांधीजी की अनोखी १५० वी जन्म जयंती

गांधीजी की १५० वी जन्म जयंती के अवसर पर स्मित चाइल्ड एज्युकेशन एन्ड डेवलोपमेन्ट ट्रस्ट के दिव्यांग बच्चों को भी गाँधी बापू के सात्विक विचार से अवगत करवाया गया। स्कुल में गाँधी जयंती की छुट्टी न दे कर उस दिन अनोखा कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें दो बच्चों को गांधीजी की वेशभूषा में प्रस्तुत किया। उन दो बच्चों के द्वारा गांधीजी के जीवन के बारे में बताया गया। उस दिन चित्र स्पर्धा का आयोजन किया गया और अच्छे चित्र बनाने वाले बच्चों को गांधीजी के हाथो से ईनाम दिया गया. कार्यक्रम के साथ में संस्था द्वारा सब के लिए भोजन का प्रबंध भी किया गया।

सोसायटी फॉर ध वेल्फेर ऑफ़ ध मेन्टली चेलेंज्ड अहमदाबाद की और से गरबा आयोजन

सोसायटी फॉर ध वेल्फेर ऑफ़ ध मेन्टली चेलेंज्ड - अहमदाबाद की और से १२ अक्टूबर को मनो दिव्यांग बच्चों के लिए 'शरद्पुनम के गरबा का आयोजन' शहर के सेटेलाइट विस्तार में स्थित समर्पण बाग पार्टी प्लोट में किया गया । इस प्रोग्राम के लिए प्रवीणभाई पुरोहित,सदविचार परिवार के पी.के.लहरी साहब,आर्यन बिल्डर ग्रुप,मंजुबेन पटेल, साईं फाउन्डेशन, अश्का रमेशभाई पटेल की और से सहकार मिला था । प्रोग्राम में अहमदाबाद की करीब २६ स्पेशल स्कूल के ३०० जीतने मनो दिव्यांग बच्चें और उनके अभिभावक और शिक्षको ने हिस्सा लिया । मृदंग वृंद म्युझिकल पार्टी के गीत और संगीत पर बच्चें झूम कर नाचे । एक ताली,तीन ताली, भांगड़ा,सनेडो, रेलगाड़ी और रास के अलग-अलग गरबा पर बच्चें और उनके अभिभावक और शिक्षकगण खेले । बेस्ट ड्रेसिंग, बेस्ट परफोर्मन्स के १६ जीतने ईनाम मनो दिव्यांग बच्चों को दिया गया । कार्यक्रम के बाद सब को भाजीपाव और शीरा का स्वादिष्ट भोजन दिया गया । इस गरबा का कार्यक्रम अच्छी तरह संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर सोसायटी के प्रमुख राजेंद्रभाई शाह और सेक्रेटरी मुरली वाधवानी के साथ सोसायटी के अन्य कारोबारी सदस्य भी उपस्थित रहे ।

निलेश पंचाल
गरबा कन्वीनर (SWMR)

देश की पहली नेत्रहीन महिला आईएएस प्रांजल बनीं तिरुवनंतपुरम की सब कलेक्टर

पाटिल की दृष्टि जन्म से ही कमजोर थी लेकिन छह वर्ष की उम्र में उनकी दृष्टि पूरी तरह से खत्म हो गई। उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा में 773वां रैंक हासिल किया था।

प्रांजल ने सोमवार को तिरुवनंतपुरम में सब कलेक्टर का पदभार संभाला

तिरुवनंतपुरम :-

देश की पहली नेत्रहीन महिला आईएएस अफसर प्रांजल पाटिल ने सोमवार को तिरुवनंतपुरम में सब कलेक्टर के तौर पर पदभार संभाल लिया। महाराष्ट्र के उल्हासनगर की निवासी प्रांजल केरल कैडर में नियुक्त होने वाली पहली दृष्टि बाधित आईएएस अफसर हैं।

पाटिल की दृष्टि जन्म से ही कमजोर थीं, लेकिन छह वर्ष की उम्र में उनकी दृष्टि पूरी तरह से खत्म हो गई। लेकिन उन्होंने अपनी हिम्मत नहीं हारी और जीवन में कुछ करने की लगन लेकर वे आगे बढ़ती रहीं। उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा में 773वां रैंक हासिल किया है।

प्रांजल केरल कैडर में नियुक्त होने वाली पहली दृष्टि बाधित आईएएस अफसर हैं

मुंबई के सेंट जेवियर से किया बीए :-

प्रांजल ने मुंबई के दादर स्थित श्रीमति कमला मेहता स्कूल से पढ़ाई की है। यह स्कूल प्रांजल जैसे खास बच्चों के लिए था। यहां पढ़ाई ब्रेल लिपि में होती थी।

प्रांजल ने यहां से 10वीं तक की पढ़ाई की। फिर चंदाबाई कॉलेज से आर्ट्स में 12वीं की, जिसमें प्रांजल के 85 फीसदी अंक आए। बीए की पढ़ाई के लिए उन्होंने मुंबई के सेंट जेवियर कॉलेज का रुख किया।

उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में यूपीएससी की सिविस सेवा परीक्षा में कामयाबी पाई

ग्रैजुएशन में आईएएस बनने की ठानी :-

ग्रैजुएशन के दौरान प्रांजल और उनके एक दोस्त ने पहली दफा यूपीएससी के बारे में एक लेख पढ़ा। प्रांजल ने यूपीएससी की परीक्षा से संबंधित जानकारियां जुटानी शुरू कर दीं।

उस वक्त प्रांजल ने किसी से जाहिर तो नहीं किया लेकिन मन ही मन आईएएस बनने की ठान ली। बीए करने के बाद वह दिल्ली पहुंचीं और जेएनयू से एमए किया।

इस दौरान प्रांजल ने आंखों से अक्षम लोगों के लिए बने एक खास सॉफ्टवेयर जॉब ऐक्सेस विद स्पीच की मदद ली।

हौसलों की उड़ान : दिव्यांग ज्योति मस्तेकर बनी युवाओं के लिए प्रेरणा

'हर रोज गिर कर भी मुकम्मल खड़े हैं, ऐ जिंदगी देख, मेरे हौंसले तुझसे भी बड़े हैं', इस बात की जीती जागती मिसाल है 29 वर्षीय दिव्यांग ज्योति मस्तेकर, जिसने अपनी कमजोरी को ही अपनी ताकत बना डाला है, मायानगरी की रहने वाली ज्योति मस्तेकर नारायण सेवा संस्थान द्वारा मुंबई में 10 नंवबर करायें जाने वाले 14वें दिव्यांग टैलेंट शो के दौरान ब्लॉकबस्टर नृत्य प्रदर्शन करनें वाली हैं, मुंबई की तंग बस्ती के गलियारों में पली-बढ़ी ज्योति मस्तेकर चव्हाण का एक हाथ दूसरे से हाथ छोटा है इसके बावजूद ज्योति का नृत्य को लेकर उत्साह जिंदा है। जब से ज्योति स्कूल जाने लगी तब से उसने नृत्य सीखना व कार्यक्रमों में भाग लेना शुरू कर दिया था।

ज्योति के पिता ने बढ़ाया उनका हौसला :- जैसे-जैसे ज्योति, उम्र की दहलीज लांघती गई, वैसे-वैसे उसकी प्रतिभा और निपुणता और निखरती गई। ज्योति को सबसे ज्यादा धक्का तब लगा जब उसके पिता ने इसी साल करीब 7 महीने पहले दुनिया को अलविदा कह दिया। ज्योति के पिता उनके नृत्य के लिए प्रेरणा के स्त्रोत थे और हरवक्त उत्साह बनायें रखनें की पूरी यात्रा में सबसे बड़ा सहारा थे। ऐसे हालात में घर पूरी तरह बिखर चुका था। घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए उसकी मां को लोगों के घरों में काम करना पड़ता था। घर में शुरू से लेकर आज तक ज्योति ने आर्थिक-तंगी से भरा माहौल देखा है। मगर आज जब वह एक पत्नी है और एक 4 साल के बेटे विहान की मां है, जो अपने परिवार के जीवन को सुखद और संवारने के लिए अपने लक्ष्यों को मेहनत के साथ प्राप्त करने के लिए दृढ़ है।

नारायण सेवा संस्थान :- नारायण सेवा संस्थान के प्रेसीडेंट प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि पहली बार जब ज्योति से मिला तो उनकी बेबाकी और कुछ कर दिखाने के जज्बे को देखकर में चौंक गया था और मुझे कहीं से भी नहीं लगा कि ज्योति कमजोर है या मजबूर ह इसलिए दिव्यांग टैलेंट शो के जरिए हम कई सारी जिंदगियों में ज्योति लाना चाहते है और उनके साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना चाहते है।

परेशानियों के आगे ज्योति ने नहीं टेके घुटने :- नृत्य जैसी कला के प्रति लोगों की रूढ़िवादी जैसी बेकार की मानसिकता के कारण शादी होने के बाद ज्योति को कई तरह की बाधाओं का सामना करना पड़ता है, मगर ऐसी विकट परिस्थितियों में भी ज्योति ने कभी खुद को झुकने नहीं दिया।

लावणी जैसे (मराठी लोक नृत्य) को बखूबी करती है ज्योति

वह कला क्षेत्र में नए आयाम छूने के लिए अग्रसर होते हुए विभिन्न डांस ग्रुप्स के साथ नृत्यांगना के तौर पर उनके साथ जुड़ती चली गई, जिनमें विशेष तौर से अलग- अलग दिव्यांग नृत्य समूहों के साथ प्रदर्शन किये तथा लावणी जैसे (मराठी लोक नृत्य) के अलावा वह बॉलीवुड, फ्रीस्टाइल और अन्य नृत्यरूपों का भी प्रदर्शन करती है। ज्योति ने नृत्य करने के लिए कई पूर्वाग्रहों, पक्षपात और भेदभावों का सामना किया, लेकिन ज्योति ने हार न मानते हुए अपने इरादों को चट्टान का रूप देकर कठिनाइयों से भरे तूफानों का सामना किया।

एक अदभूत व्यक्तित्व शिवानी गुप्ता

शिवानी गुप्ता ने रीडिंग विश्वविद्यालय, यूके से M.Sc. 'समावेशी वातावरण - डिजाइन और प्रबंधन' के पूरा होने के बाद AccessAbility की स्थापना की। वर्ष 2000 में थाईलैंड में संयुक्त राष्ट्र ESCAP मुख्यालय में आयोजित विकलांग व्यक्तियों और बुजुर्गों के लिए गैर-विकलांग वातावरण पर प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेना, उनके लिए एक जीवन-परिवर्तनकारी क्षण था। इसने चिकित्सा दृष्टिकोण से विकलांगता के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदल दिया कि समावेशन के लिए विकलांग व्यक्ति को एक सामाजिक दृष्टिकोण के लिए तय करना होगा, जहां समाज को विकलांगों को समान आधार पर भाग लेने के लिए सक्षम और अधिक सुलभ और समावेशी बनने की आवश्यकता थी। उन्होंने महसूस किया कि विकलांग लोगों की पहुंच और भागीदारी को उनके मिशन के रूप में सुलभता को मान्यता दी गई थी। इस समझ के बाद उसने आगे की पढ़ाई करके 2004 में आर्किटेक्चर टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा प्राप्त किया और AccessAbility शुरू करने से पहले इस विषय में अनुस्नातक की डिग्री हासिल की। राष्ट्रीय स्तर पर अपने काम के अलावा, शिवानी ने संयुक्त राष्ट्र के उच्चायुक्त मानवाधिकार, अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता गठबंधन (आईडीए), और सीबीएम इंटरनेशनल के कार्यालय के साथ एक सलाहकार के रूप में अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं पर काम किया है। उसने भौतिक वातावरण, सार्वजनिक खरीद, सहायक उपकरणों, सहायता सेवाओं आदि में सुगमता में सुधार से संबंधित प्रकाशनों का सह-लेखन भी किया है।

शिवानी को दिव्यांगता क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों और उनके व्यक्तिगत साहस के लिए, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा मिली है। शिवानी को हेलेन केलर अवार्ड (2008), कैविनकेयर एबिलिटी मास्टरी अवार्ड (2008), नेशनल रोल मॉडल अवार्ड (2004), नीरजा भनोट अवार्ड (2004), रेड एंड व्हाइट सोशल ब्रेस्ट अवार्ड (1999) और सुलभ इंटरनेशनल वुमन ऑफ द ईयर अवार्ड (1996)से सम्मानित किया गया है।

AccessAbility में उसके काम से उसने प्रशंसा हासिल की लेकिन व्यक्तिगत त्रासदी के चलते वो मायूस रही। हालांकि, इन वर्षों में भी चिकित्सा और पुनः शक्ति का उपयोग उनके द्वारा भारत में एक विकलांग महिलाओं के रूप में 'नो लुकिंग बैक' नामक उनके संस्मरणों को कलमबद्ध किया गया था, जो विकलांगों को स्वीकार करने और मित्र बनाने के द्वारा जीवन में आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के नाते, समाज से सक्षम होने के रूप में प्यार पाने और स्वीकार करने के लिए सामान्यता खोजने के लिए संघर्ष करते हैं। इन वर्षों के दौरान यह भी था कि उन्होंने विकलांग व्यक्तियों के पहुंच के अधिकार अधिनियम, 2016 की अध्याय को संशोधित करने और प्रारूपण करने का काम किया, जो कि उनकी खुशी के लिए अब प्रणाली में ही सुलभता के निर्माण की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है।

ज्ञान और चुनौतियों से प्रेरित होने के कारण, उन्होंने 2016 में हॉलैंड के मास्ट्रिच विश्वविद्यालय में पीएचडी कार्यक्रम में दाखिला लिया और हॉलैंड के विदेश मंत्री के लिए पूर्ण फैलोशिप प्राप्त की। विकलांगता से संबंधित विभिन्न और अनदेखी चुनौतियों को सरल करने के लिए आकर्षित होने के कारण, उनके शोध का क्षेत्र ग्रामीण भारत में CRPD के अनुच्छेद 19 के कार्यान्वयन के इर्द-गिर्द घूमता है, जो ग्रामीण विकलांग लोगों के लिए मौजूद समर्थन संरचनाओं पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है और जो उनके जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। परिणाम स्वरूप वह भविष्य में इन पहलुओं पर अपने काम पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद करती है।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर